M.A. 4th Semester Examination, 2013

HINDI

PAPER – HIN-404 (A + B)

Full Marks : 40

Time : 2 hours

The figures in the right-hand margin indicate marks

Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable

Illustrate the answers wherever necessary

404 (A)

Premchand (Special Paper)

प्रथम प्रश्न अनिवार्य है । शेष प्रश्नों में से किन्हीं *दो* के उत्तर लिखिए : 8 × 2

1. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं *दो* की ससन्दर्भ व्याख्या लिखिए :

(*क*) जो पुरूष तीस–चालीस रूपये महीने का नौकर हो, उसकी स्त्री अगर दो–चार रूपये रोज खर्च करे, हजार–दो हजार

के गहने पहनने की नीयत रखे, तो वह अपनी और उसकी तबाही का सामान कर रही है । अगर तुमने मुझे इतना धन-लोलुप समझा, तो कोई अन्याय नहीं किया । मगर एक बार जिस आग में जल चुकी, उसमें फिर न कुदूँगी । इन महीनों में मैंने उन पापों का कुछ प्रायश्चित किया है और शेष जीवन के अन्त समय तक करूँगी ।

(*ख*) वह सम्पत्ति आज उसके हाथ से निकल गई । अब वह निराधार थी । संसार में उसे कोई अवलम्ब, कोई सहारा न था । उसकी आशाओं का आधार जड़ से कट गया, वह फूट-फूट कर रोने लगी । ईश्वर! तुमसे इतना भी न देखा गया ? मुझ दुखिया को तुमने यों ही अपंग बना दिया था, अब आँखें भी फोड़ दीं । अब वह किसके सामने हाथ फैलायेगी, किसके द्वार पर भीख माँगेगी ।

(*ग*) क्लबधर में जादू होता है । सुना है, यहाँ मुरदे की खोपड़ियाँ दौड़ती हैं और बड़े-बड़े तमाशे होते हैं, पर किसी को अन्दर नहीं जाने देते । और यहाँ शाम को साहब लोग खेलते हैं बड़े-बड़े आदमी खेलते हैं, मूछों-दाढ़ी वाले और मेमें भी खेलती हैं, सच । हमारी अम्मा को वह दे दो, क्या नाम है, बैट, तो उसे पकड़ ही न सकें । घुमाते ही लुढ़क न जाएँ ।

(घ) 'आजमाये को आजमाना मूर्खता है' – इस कहावत के अनुसार यदि हम अब भी धर्म और नीति का दमन पकड़ कर समानता के ऊँचे लक्ष्य पर पहुँचना चाहें, तो विफलता ही मिलेगी । क्या हम इस सपने को उत्तेजित मस्तिष्क की सृष्टि समझ कर भूल जाएँ ? तब तो मनुष्य की उन्नति और पूर्णता के लिए आदर्श ही बाकी न रह जाएगा । इससे कहीं अच्छा है कि मनुष्य का अस्तित्व ही मिट जाय ।

2. "'गबन' में मध्यवर्गीय जीवन की बिड़म्बना का चित्र अंकित हुआ है ।" — इस कथन की समीक्षा कीजिए । 12

3. निर्मला का चरित्र-चित्रण कीजिए । 12

4. 'सवासेर गेहूँ' कहानी की व्यावहारिक समीक्षा कीजिए । 12

5. 'साहित्य का उद्देश्य' लेख में प्रेमचन्द ने साहित्य के किन उद्देश्यों के प्रति हमारा ध्यानाकृष्ट करना चाहा है — अपने शब्दो में लिखिए । 12

404 (B)

निराला (Special Paper)

1. निम्नलिखित अवतरणों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए : 8 × 2

(क) धन्ये, मैं पिता निरर्थक था,
कुछ भी तेरे हित न कर सका ।

जाना तो अर्थोगमोपाय,
पर रहा सदा संकुचित-काय
लखकर अनर्थ आर्थिक पथ पर
हारता रहा मैं स्वार्थ-समर ।

अथवा

जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर,
ऐ विप्लव के वीर ।
चूस लिया है उसका सार,
हाड़ मात्र ही है आधार,
ऐ जीवन के पारावार ।

(*ख*) महात्माजी, आप मुझसे हजार गुना ज्यादा पढ़े हो सकते हैं । तमाम दुनिया में आपका डंका पिटता है, लेकिन हर एक की परिस्थिति को आप हरगिज नहीं समझ सकते । अगर समझते, तो मौन न रहते । जब मौन हैं, तब आप भगवान हरगिज नहीं हां सकते । भगवान अन्तर्यामी होत हैं, आप अन्तर्यामी नहीं हैं । यह मुझे पूरा-पूरा विश्वास हो गया है । आपको बनियों ने भगवान् बनाया है, ...

अथवा

देश में शुल्क लेकर शिक्षा देनेवाले बड़े-बड़े विश्वविद्यालय हैं। पर इस बच्चेका क्या होगा ? इसके भी माँ है। वह देश की सहानुभूति का कितना अंश पाती है — हमारी थाली की बची रोटियाँ, जो कल तक कुत्तों को दी जाती थीं। यही, यही हमारी सच्ची दशा का चित्र है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों में सें किन्हीं *दो* के उत्तर दीजिए : 12 × 2

(*क*) 'कुल्ली भाट' का मुख्य प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

(*ख*) 'चतुरी चमार' की भाषाशैली पर प्रकाश डालिए।

(*ग*) पठित निबंध के आधार पर निराला की साहित्य की प्रगति संबंधी विचारों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

(*घ*) निराला की प्रगतिशील चेतना पर प्रकाश डालिए।

(*ङ*) 'राम की शक्तिपूजा' की मूल संवेदना पर रोशनी डालिए।